6

योनातन

बाज़ीगरी वाली वफ़ादारियां

सिसली के ऐल्डर सिपियो से किसी ने पूछा कि वह किसके भरोसे से कार्थेज के विरुद्ध अपनी नौ सेना को भेजने की सोचता है। उसने उसे तट पर टावर की ओर मुंह किए हथियारों से लैस तीन सौ अनुशासित लोगों को दिखाते हुए कहा ''इनमें से एक भी ऐसा नहीं है जो मेरा आदेश मिलने पर उस टावर पर जाकर अपने आप को सिर के बल न फैंक दे।'' सिपियो गया, जहाज़ से उतरा और उसने शत्रु की छावनी को आग लगा दी। इस पर कार्थेजिनियों ने अपने जहाज़ उनके सपुर्द करने और हाथियों के अलावा धन देने की पेशकश की। अपने सैनिकों की वफ़ादारी ने ही उसे विजय दिलाई थी।

इस कहानी के अन्दर एक तथ्य है जो योनातन के जीवन से बहुत मिलता है और वह तथ्य है *वफ़ादारी।* 1 शमूएल की पुस्तक वाला यह आदमी एक असाधारण व्यक्तित्व वाला मनुष्य है। वह शाऊल का सबसे बड़ा पुत्र अर्थात एक राजकुमार था। योनातन अच्छे गुणों से भरपूर अर्थात निर्भय सिपाही, अपने सैनिकों से नि:संकोच निष्ठा पाने वाला सेनापति, मानवीय प्रेम के सर्वोज़म गुणों को दिखाने में सक्षम मित्र और परमेश्वर में अथाह विश्वास रखने वाला एक विश्वासी है। योनातन सच बोलने वाला, शुद्ध जीवन जीने वाला तथा उन सब बुराइयों को जिन्हें वह देखता था, सुधारने की कोशिश करने वाला था। उसका प्रतिभाशाली व्यक्ति अपने पिता से नाटकीय रूप में भिन्न है।

उसकी वफ़ादारी

योनातन परमेश्वर की आज्ञाओं को जो वफ़ादारी करने को विवश करती थीं, अच्छी तरह जानता था (निर्गमन 22:28; गिनती 27:20; व्यवस्थाविवरण 7:9; नीतिवचन 24:21; इत्यादि)। इस बात में वह परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने में सचेत था। तीन क्षेत्रों पर विचार करें, जिनमें उसकी वफ़ादारी की बात की गई है।

परमेश्वर के प्रति वफ़ादारी (14:45)

योनातन के विषय में पहले हवाले में हम उसे परमेश्वर के साथ परिचित और उसमें भरोसा रखने वाले व्यक्ति के रूप में पाते हैं। पहला शमूएल 14:6 कहता है, ''तब योनातन ने अपने हथियार ढोने वाले जवान से कहा, आ, हम उन खतनारहित लोगों की चौकी के पास जाएं; ज़्या जाने यहोवा हमारी सहायता करे; ज़्योंकि यहोवा को कुछ रोक नहीं, कि

चाहे तो बहुत लोगों के द्वारा चाहे थोड़े लोगों के द्वारा छुटकारा दे।'' परमेश्वर में योनातन का दृढ़ विश्वास था (14:12ख)।

परमेश्वर के प्रति उसकी वफ़ादारी 1 शमूएल में कई जगह दिखाई गई है। दाऊद को गत वासी दानव का वध करते हुए योनातन और शाऊल द्वारा देख लेने पर योनातन को उसमें परमेश्वर का समर्थन दिखाई पड़ा था (19:5)। शाऊल के द्वेष के कारण योनातन और दाऊद को अलग करने के समय उसने अपनी उदासी में यह जानते हुए कि परमेश्वर उनके साथ है, सांत्वना पाई थी (20:42)। दोनों मित्रों के अंतिम बार मिलने पर, परमेश्वर में योनातन को अधिक भरोसा था (23:16)। योनातन के विश्वास से ही दाऊद को सामर्थ मिली थी।

ये तथ्य योनातन को एक पज्के विश्वासी के रूप में प्रस्तुत करते हैं। वह सांसारिक झगड़े, ज़्लेश और निराशा पर परमेश्वर पर विश्वास के कारण ही विजय पा सका था! योनातन को परमेश्वर के उद्देश्य तथा योजनाओं में एक हथियार के रूप में इस्तेमाल होने की उज़्मीद थी। योनातन को अपने आप पर कम, परन्तु परमेश्वर में जबर्दस्त विश्वास था। योनातन इसलिए सफल हुआ ज़्योंकि उसने परमेश्वर से सामर्थ मांगी थी (तु. मरकुस 11:24)।

परमेश्वर के प्रति योनातन की वफ़ादारी के सज़्बन्ध में, इससे बड़ी कोई और टिप्पणी नहीं हो सकती कि ''उसने परमेश्वर के साथ होकर काम किया है'' (14:45ख)।

मित्र के रूप में वफ़ादारी (18:1)

योनातन और दाऊद की मित्रता पज़्की और एक दूसरे को समर्पित थी (18:3, 4)। मित्रता की यह वाचा एक दूसरे को कपड़े देने से बांधी गई थी। इसलिए इसमें एक दूसरे के साथ मेल का चित्रण था। वाचा के अनुसार यदि कोई योनातन के विरुद्ध लड़े तो वह वास्तव में दाऊद के विरुद्ध लड़ रहा होता; यदि वह दाऊद के विरुद्ध लड़े तो वास्तव में वह योनातन के विरुद्ध लड़ता। यह वाचा दो मित्रों के बीच में सबसे बड़ा बंधन थी।

योनातन को पता था कि वह कभी राजा नहीं बनेगा (23:17) परन्तु उसमें दाऊद के प्रति ज़रा सा भी द्वेष नहीं था। दाऊद के प्रति उसकी वफ़ादारी ने हमेशा अपने मित्र का भला ही चाहा। इस प्रकार योनातन हमें दिखाता है कि सच्ची मित्रता *बलिदान से पूर्ण* होती है।

योनातन की मित्रता में सच्ची मित्रता के ये तत्व थे: ''प्रसन्न'' (19:1, ''समर्पण''; NEB); ईमानदारी (20:9); लगाव (20:42; 2 शमूएल 1:26); प्रोत्साहन तथा सामर्थ देना (23:16)।

भजन संहिता 133 पढ़ते हुए आप योनातन और दाऊद की मित्रता की सुन्दरता को याद करते हैं। मित्रता का यह बंधन अगले ऐतिहासिक विवरण से समझाया जाता है। यूनानी इतिहास में इपामिनोन्दस और पिलोपिदास की मित्रता का वर्णन किया जाता है। मैंटिनिया के युद्ध में, उन्होंने अपने कवच आपस में बांधकर लड़ाई लड़ी थी, जिससे वे पिलोपिदास के कई घावों से खून बहने तक सब शत्रुओं को मारते रहे। इपामिनो ने अपने दोस्त जिसे वह

मरा हुआ समझ रहा था, की देह को वहां पर छोड़कर जाने से बेहतर मरते दम तक लड़ने का विचार किया। गम्भीर रूप से ज़ख़्मी होने के बाद भी वह ज़िन्दा रहा और बचाव दल के पहुंचने तक लड़ता रहा और दोनों बच गए। उस दिन के बाद उनकी दोस्ती मिसाल के काबिल बन गई। उन दोनों को थिबियन सेना के सेनापति बना दिया गया, एक ही पद और एक ही अधिकार के साथ, और मरने तक उन दोनों में कभी भी किसी तरह की शत्रुता या मतभेद पैदा नहीं हुआ। (नीतिवचन 17:17क; 18:24ख।)

पुत्र के रूप में वफ़ादारी (2 शमूएल 1:23)

इसी वफादारी में योनातन ने अकल्पित झगड़े किए। वह जानता था कि परमेश्वर ने दाऊद को इस्राएल का अगला राजा होने के लिए नियुक्त किया है। इसलिए परमेश्वर के प्रति उसकी वफ़ादारी के कारण दाऊद का समर्थन करना आवश्यक था (23:17)। दाऊद के साथ उसकी मित्रता शाऊल की द्वेषपूर्ण योजनाओं में उसका साथ देने के बजाय भरोसे योग्य बने रहने की थी (20:9, 12; 23:17)। परन्तु अपने पिता के प्रति वफ़ादारी उसे शाऊल का सहयोग और समर्थन करने के लिए विवश करती थी! उसके युवा मन को हिसाब लगाकर इन उलझनों पर निर्णय लेना था। उसे ''अंडों पर चलना'' था। या, आप कह सकते हैं कि उसे एक शानदार ''बाज़ीगरी वाला काम'' करना था!

योनातन शाऊल के साथ रहा। वह अपने पिता के प्रति तो समर्पित था ही, परन्तु उसने परमेश्वर तथा दाऊद के प्रति अपनी वफ़ादारी भी नहीं त्यागी थी (23:16, 17)। शाऊल के शुरुआती सालों में योनातन के लिए अपने पिता के प्रति वफ़ादार बने रहना ज्यादा कठिन नहीं था। योनातन जानता था कि शाऊल परमेश्वर से जुड़ा हुआ है। परन्तु शाऊल के विद्रोह से परमेश्वर राजा से अलग हो गया था और उस पर दुष्टात्माएं हावी हो गई थीं। शाऊल के पुकारने के समय योनातन अपने पिता के साथ था। शायद उसे उम्मीद थी कि बुराई अभी भी पलट सकती है। अपनी पसन्द के कारण योनातन को कई कठिन परीक्षाओं से गुजरना पड़ा था, परन्तु वह अपने चुने हुए मार्ग से कभी पीछे नहीं हटा (20:30-33)।

गिलबो पर्वत पर जाने के समय योनातन शाऊल के साथ था। उसी पर्वत पर पिता और पुत्र दोनों की मृत्यु हुई।

माता-पिता के प्रति बच्चों की वफ़ादारी की आज्ञा स्पष्टतया परमेश्वर की ओर से ही है (लैव्यव्यवस्था 20:9; निर्गमन 20:12; आदि)। योनातन की तरह चलने वाले और अपने माता-पिता के प्रति वफ़ादार रहने वाले सभी बच्चे आशीष पाएंगे। यह स्पष्ट है कि जब परमेश्वर के प्रति और माता-पिता के प्रति वफ़ादारी में से एक को चुनना होता है तो हमें अपने माता-पिता के बजाय परमेश्वर को ही चुनना चाहिए, चाहे उसके लिए कितना भी कष्ट ज़्यों न उठाना पड़े! (मत्ती 10:34-39)।

वफ़ादारी के सबक

परमेश्वर के प्रति वफ़ादारी सर्वोपरि है। परमेश्वर के प्रति वफ़ादारी हमारे हृदयों और

हमारी जीवन शैली में हर कीमत में होनी चाहिए! जब बिशप बौनर ने जॉन ऑडली को इस आशा से कि उसे छोड़ दिया जाएगा, खूंटे में बांधकर जलाए जाने की पीड़ा के बारे में बताया था, तो ऑडली ने जवाब दिया था, ''यदि मुझे मेरे सिर के बालों जितने जीवन भी मिलें तो भी मैं मसीह को छोड़ने से पहले उन सबको आग में खो देना उचित समझूंगा'' (तु. भ.सं. 18:1; 91:14; निर्गमन 22:28)। परमेश्वर के प्रति वफ़ादारी की तस्वीर गृह युद्ध में एक जवान ढोली ने भी दिखाई थी। उसने जाड़े के अभियान की कठिनाइयों अर्थात चीरती हुई सर्द हवा, भूख और उस नंगेपन के बारे में लिखा, जो उन्होंने सहे थे। समाप्ति उसने इन शब्दों के साथ ''परन्तु मां, यह तो हमारा फ़र्ज़ है, और फ़र्ज़ की खातिर हम मिट जाएंगे।'' परमेश्वर के साथ हमारे सम्बन्ध में ऐसी ही वफ़ादारी दिखाई देनी चाहिए।

परिवार या मित्रों के प्रति वफ़ादारी गलती को अनदेखी नहीं करती। यह हमेशा हमारा सामना करती है! योनातन शाऊल से प्रेम करता था और नि:संदेह उसके प्रति वफ़ादार भी था, परन्तु उसने उस प्रेम को शांत नहीं रखने दिया। उसने न्याय, धार्मिकता तथा सच्चाई के पक्ष में बोलना था! (19:1-6; 20:30-33)। हमारे जीवन में जब हमारे परिवार या मित्र गलती करते हैं और उन्हें सुधार की आवश्यकता होती है तो शांत रहना आसान होता है। हम कहते हैं, ''मैं भी यही कहने वाला था।'' ऐसा व्यवहार सही *नहीं* है! (नीतिवचन 27:6, 9, 17; गलतियों 4:16)।

वफ़ादारी किसी समर्पित मित्र की मृत्यु होने पर पुरानी यादें ताज़ा कर देगी। योनातन की यादें 2 शमूएल 1:19-27 के शब्दों में रोशन हो उठीं:

> हे इस्राएल, तेरा शिरोमणि तेरे ऊंचे स्थान पर मारा गया। हाय, शूरवीर ज़्योंकर गिर पड़े हैं! गत में यह न बताओ, और न अश्कलोन की सड़कों में प्रचार करना; न हो कि पलिश्ती स्त्रियां आनन्दित हों, न हो कि खतनारहित लोगों की बेटियां गर्व करने लगें। हे गिलबो पहाड़ो, तुम पर न ओस पड़े, और न वर्षा हो, और न भेंट के योग्य उपज वाले खेत पाए जाएं! ज़्योंकि वहां शूरवीरों की ढालें अशुद्ध हो गईं, और शाऊल की ढाल बिना तेल लगाए रह गई। जूझे हुओं के लोहू बहाने से, और शूरवीरों की चर्बी खाने से, योनातन का धनुष लौट न जाता था, और न शाऊल की तलवार छूछी फिर आती थी। शाऊल और योनातन जीवन काल में तो प्रिय और मनभाऊ थे, और अपनी मृत्यु के समय अलग न हुए; वे उकाब से भी वेग चलने वाले, और सिंह से भी अधिक पराक्रमी थे। हे इस्राएली स्त्रियो, शाऊल के लिए रोओ, वह तो तुम्हें लाल रंग के वस्त्र पहिनाकर सुख देता, और तुम्हारे वस्त्रों के ऊपर सोने के गहने पहिनाता था। हाय, युद्ध के बीच शूरवीर कैसे काम आए! हे योनातन, हे ऊंचे स्थानों पर जूझे हुए, हे मेरे भाई योनातन, मैं तेरे कारण दु:खित हूं; तू मुझे बहुत मनभाऊ जान पड़ता था; तेरा प्रेम मुझ पर अद्भुत वरन स्त्रियों के प्रेम से भी बढ़कर था। हाय, शूरवीर ज़्योंकर गिर गए, और युद्ध के हथियार कैसे नाश हो गए!

दाऊद के लिए योनातन की मित्रता की यादें सदैव आनन्ददायक थीं (2 शमूएल 1:26, 27क)।

वफ़ादारी आने वाली पीढ़ियों के लिए फलदायक होती है। 20:42 की बातें 2 शमूएल 9:1-13 तथा 2 शमूएल 21:1-7 में पूरी होती हैं। योनातन की वफ़ादारी ने आशीषों की एक विरासत छोड़ दी थी। शाऊल के विद्रोह से उपजे परिवार की अधोगति तथा गुमनामी, योनातन की वफ़ादारी के कारण ऊंचे स्थान पर उठाई गई।

सारांश

योनातन में कई मसीही गुण थे। परन्तु उनमें सबसे प्रमुख गुण वफ़ादारी का था। वह गिलबो पर्वत पर हुए भयंकर युद्ध में मारा गया था, परन्तु उसने अपने जीवन में इतनी शानदार विजय पाई थी जिसे पलिश्ती कभी पराजित न कर सके। योनातन ने बुरी इच्छाओं पर विजय का आनन्द मनाया था जिसे कामना, क्रोध तथा द्वेष मिटा नहीं सकते थे। उसकी सर्वोज़म विजय को एक ही शज़्द *वफ़ादारी* से संक्षिप्त किया जाता है!

ज़्या परमेश्वर के प्रति आपकी वफ़ादारी आपके *नियन्त्रण में* है? ज़्या मित्रों के प्रति आपकी वफ़ादारी *कार्य कर रही* है? ज़्या आप परिवार के प्रति वफ़ादारी को महत्व देते हैं?